पाठ्यक्रम
विषय : संस्कृत
कक्षा : ग्यारहवी

समय : 3 घण्टे

लिखित =80
आन्तरिक मूल्यांकन = 20
कुल अंक=100

प्रश्नपत्र में कुल 14 प्रश्न होंगे।
प्रश्न पत्र में चार भाग (क से घ तक) होंगे ।

भाग – क

अति लघूत्तर प्रश्न (वस्तुनिष्ठ प्रश्न)

प्रश्न-1 में (i) से (x) तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे । प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा ।ये प्रश्न एक शब्द से एक वाक्य तक के उत्तरों वाले अथवा हाँ/नहीं अथवा सही/गलत अथवा बहुवैकल्पिक उत्तरों वाले, किसी भी प्रकार के हो सकते हैं ।यह प्रश्न पाठ्यक्रम से ही पूछे जायें।

(i) से (ii) तक शब्द रूप (पुल्लिग ,स्त्री लिंग तथा नपुंसकलिंग) से सम्बन्धित दो वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे ।

(iii) से (iv) तक धातुरूप (लट्लकार, लोट्लकार,लङ्लकार, विधिलिङ् लकार, लृट्लकार) से सम्बन्धित दो वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे ।

(v) से (vi) तक केवल (इतरेतर, एकशेष ,समाहार) दुन्द्व समास से सम्बन्धित दो वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे

(vii) से (viii) तक तुलनात्मक प्रत्यय अथवा स्त्री प्रत्यय से सम्बन्धित दो वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे।

(ix) से (x) तक सन्धि से सम्बन्धित दो वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे

भाग –ख
(पाठ्य पुस्तक के 1 से 18 तक पाठ)

2 गद्यांशों का हिन्दी या पंजाबी या अंग्रेज़ी में अनुवाद ।
3 पद्य का हिन्दी या पंजाबी या अंग्रेज़ी में प्रसंग सहित अर्थ ।
4 पाठों के अभ्यासों में से हिन्दी में प्रश्न ।
5 पाठों के अभ्यासों में से संस्कृत लघु प्रश्न ।
6 पाठों के अभ्यासों में से संस्कृत शब्दों के हिन्दी मे अर्थ ।
7 पाठों के अभ्यासों में से रिक्त स्थान पूर्ति ।

अथवा

पाठों के अभ्यासों में से यथानिर्दिष्ट परिवर्तन ।

भाग– ग
नाटक (19 , 20 पाठ)

8 (क) नाटक के अंशों का प्रसंग सहित अर्थ हिन्दी या पंजाबी या अंग्रेजी में।
(ख) नाटक के अभ्यासों पर आधारित हिन्दी में प्रश्न ।

भाग–घ
(व्याकरण भाग)

9 (क) शब्द रूप : (पु.) देव, पति, सखि, साधु, महत्, वलवत्, पठत्, गच्छत्, आत्मन्,।
(नपुं.) फल , पठत ,नामन् महत्, गच्छत्,्।
(स्त्री.) प्रभा , नदी वधू प्रभा, महती, गच्छन्ती, पठन्ती।
सर्वनाम सव लिंगों और विभक्तियों में –युस्मद् ,अस्मद् ,तद्, एतद्, यद्, इदम्, किम्,सर्व।
(ख) धातु रूप : (लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् , लृटलकार्)
भ्वादिगण : (परस्मैपद) गर्ज ,सृ ,तृ ,।
आत्मनेपद– लभ् , सेव् , वृत् ।
तुदादिगण : (प.) सिच् ।
दिवादिगण : (प.) शम्।
चुरादिगण : उभयपद (प.)चिन्त् ,तुल् ,पाल् कथ्

10 वाक्य शुद्धि : अशुद्ध– शुद्ध वाक्यों पर आधारित ।

अथवा

वाच्य परिवर्तन :– कर्तृवाच्य ,कर्मवाच्य , भाववाच्य की सरल रचनाएं केवल लट्लकार में ।

11 समास :

केवल (इतरेतर , एकशेष ,समाहार) द्वन्द्व समास ।

अथवा

सन्धि :

स्वर सन्धि :–पूर्वरूप विधि , पररूप विधि , प्रकृतिभाव सन्धि ।

व्यंजन सन्धि :–श्चुत्व विधि , ष्टुत्व विधि ,छत्व विधि,चर विधि , अनुनासिक विधि, अनुस्वर विधि , षत्व विधि , लत्व विधि , जश् विधि ,पूर्व सवर्ण विधि ।

विसर्ग सन्धि – लोप विधि , उत्व विधि ,रत्व विधि , शत्व विधि , सत्व विधि ।

12 निम्नलिखित धातुओं के साथ क्त, क्तवतु ,शतृ ,शानच् , प्रत्यय लगाकर तीनों लिंगों में केवल प्रथमा विभक्ति एकवचन के रूप –भू, पठ्, लिख् ,नम् , हस्, वस् , चल् , पत् , खाद् धाव्,क्रीड्,
दृश् , स्था, पा, सेव् , वृत् ,वृध् , लभ् ।

अथवा

निम्नलिखित धातुओं के साथ क्त्वा प्रत्यय के रुप तथा उपयुक्त उपसर्ग लगाकर ल्यप् प्रत्यय के रुप गम्, नम्, नश्, पत्, क्षल्, जि, नी, विश्, भू, स्था, घ्रा, दा, आप, कृ, हृ,स्मृ।

13 तुलनात्मक प्रत्यय: विशेषणों के साथ केवल तरप् तथा तमप् प्रत्यय ।

अथवा

तद्धित प्रत्यय – केवल भाववाची त्व और ता प्रत्यय ।

अथवा

स्त्री प्रत्यय – ई तथा आ प्रत्यय के सरल प्रयोग ।

14 हिन्दी सरल वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद ।

निर्धारित पुस्तक : संस्कृत सौरभम्– 11 पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड द्वारा प्रकाशित

आन्तरिक मूल्यांकन

आन्तरिक मूल्यांकन के कुल 20 अंक हैं, जो दो भागों में विभक्त किया गया है।

भाग- क (गतिविधियां) — अंक 10

यह मूल्यांकन विद्यार्थी द्वारा पूर्ण साल में की गई गतिविधियों पर आधारित होगा।

(क) विद्यार्थी की कक्षा में उपस्थिति = 2 अंक

(ख) गृहकार्य = 2 अंक

(ग) घरेलू परीक्षाओं पर आधारित मूल्यांकन = 4 अंक

(घ) पुस्तक बैंक = 2 अंक (विद्यार्थी पुस्तकालय में संस्कृत विषय की पुस्तकों के संग्रह में योगदान देगा जिससे पुस्तकालय में संस्कृत विषय की पुस्तकों के भण्डार में वृद्धि होगी)

भाग- ख (परियोजनाकार्यम्) — अंक 10

यह मूल्यांकन संस्कृत भाषा के प्रति विद्यार्थी के सामान्य ज्ञान पर आधारित होगा। निम्नलिखित विषयों पर विद्यार्थी के ज्ञान का परीक्षण किया जाये।

(1) वाचन कौशल- वाचन कौशल के अंतर्गत विद्यार्थियों की वाचन कुशलता को विकसित करने के लिए पठ्य-पुस्तक में दिए गए गद्य- पद्य भाग में कोई एक अनुच्छेद पढ़ने को दिया जायेगा।

लाभ- **अंक= 3**

1. हाव- भाव सहित शुद्ध उच्चारण कौशल का विकास।
2. व्याकरणिक दृष्टि से उच्चारण में शुद्धता का विकास।
3. विद्यार्थियों में भाषण कौशल का विकास।
४. प्राचीन संस्कृत साहित्य पढ़ने की रूचि का विकास

(2) श्रवण कौशल- श्रवण कौशल के अंतर्गत विद्यार्थियों की श्रवण कुशलता को विकसित करने के लिए पठित सामग्री को सुनकर अर्थ ग्रहण करना,वार्तालाप करना, वाद-विवाद, संस्कृत गीतों को सुनने की कुशलता का विकास करना। **अंक= 3**

लाभ-

1. श्रवण के माध्यम से विद्यार्थियों मे एकाग्रता विकसित होगी।
2. मनन शक्ति का विकास होगा।
3. प्राचीन संस्कृत साहित्य सुनने की रूचि का विकास होगा।

(3) अध्यापक परियोजनाकार्य भाग में स्वतन्त्र रूप से भी कक्षा में कार्य करवा सकता है। परियोजनाकार्य का उद्देश्य संस्कृत भाषा में विद्यार्थी के लेखन कौशल का विकास करना है। इसके अंतर्गत निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर अध्यापक द्वारा विद्यार्थिओं को परियोजना तैयार करने को कहा जाएगा, जिसका मार्गदर्शन अध्यापक करेगा। परियोजना लिखते समय उसे रुचिपूर्ण बनाने के लिए विद्यार्थी चित्रों का प्रयोग भी कर सकता है।

अंक=4